द्वितीय विश्वयुद्ध

जब प्रथम विश्वयुद्ध समाप्त हुआ तो संसार के विचारशील राजनीतिज्ञों ने मिलकर एक ऐसी अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था करने का प्रयत्न किया था, जिससे भविष्य में युद्ध का निवारण हो सके और संसार प्रजातंत्र के लिए सुरक्षित बन सके, जिसमें प्रत्येक राष्ट्र के लोग स्वतंत्रतापूर्वक अपने-अपने ढंग से अपना विकास और परस्पर सहयोग करते हुए मानव-समाज में सुख, शांति एवं न्याय की प्राप्ति कर सकें। किन्तु, हम जैसा देख चुके हैं, मानव-समाज को वह आशा सफल नहीं हुई और बीस वर्षों के अन्दर ही उसे प्रथम विश्वयुद्ध से कहीं अधिक भयंकर विनाशकारी और बर्बरतापूर्ण महायुद्ध का तांडव देखना पड़ा। वस्तुतः में देखा जाए तो पेरिस की संधियों द्वारा युद्ध का अंत न हुआ; केवल उसका विराम हुआ। वह केवल युद्ध स्थगित हो गया। मार्शल फॉश ने वर्साय की संधि पर विचार करने के बाद कहा था कि "यह शांति-संधि नहीं है, यह तो बीस वर्ष के लिए युद्ध-विराम है।" इसी प्रकार एडवर्ड गिबन ने लिखा है, "यदि अंतिम युद्ध समस्त युद्धों को समाप्त करने के लिए था तो वर्साय की अंतिम शांति समस्त शांति का अंत करने के लिए थी।" मार्शल फ्रॉस की भविष्यवाणी प्रायः सत्य साबित हुई और प्रथम महायुद्ध के ठीक बीस वर्ष बाद संसार एक बार फिर द्वितीय महायुद्ध की भीषण दावानल में जल उठा।

प्रथम विश्वयुद्ध की तुलना में द्वितीय विश्वयुद्ध अधिक भयंकर, विनाशकारी और व्यापक था। द्वितीय विश्वयुद्ध के निम्नांकित कारण थे —

(1) वर्साय की संधि —

कुछ विद्वानों ने द्वितीय महायुद्ध को प्रतिशोधात्मक युद्ध कहा है। प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात पेरिस में शांति-सम्मेलन हुआ था, जिसमें विजयी राष्ट्रों ने पराजित राष्ट्रों को संधियां करने के लिए बाध्य किया था। इन सारी संधियों में वर्साय की संधि सर्वाधिक महत्वपूर्ण थी। इस संधि द्वारा मित्र राष्ट्रों ने जर्मनी को कुचलने का हर संभव प्रयत्न किया। उसकी राज्य सीमा लघु कर दी गई। उसकी आय के स्रोत पर अधिकार कर लिया गया तथा साम्राज्य को आपस में बाँट लिया गया। पोलिश गलियारे के द्वारा जर्मनी को दो भागों में बाँटा गया। जर्मनी वर्साय संधि की शर्तों में संशोधन चाहता था परंतु मित्र-राष्ट्रों ने तलवार के बल पर हस्ताक्षर करने के लिए बाध्य किया। अतः

अतः संधि को अपमानजनक मानकर उससे उद्धार पाने का कार्य जर्मन युवकों ने आरंभ किया। उन्होंने यह अनुभव किया कि अपहृत जर्मन-भूखंडों को ईश्वर की कृपा और राष्ट्रसंघ की दया से नहीं प्रत्युत शक्ति के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। इसी समय जब हिटलर का प्रादुर्भाव हुआ तो उनका उत्साह दूना बढ़ गया। जब हिटलर ने भाषण दिया कि "संधि की अपमानजनक शर्तों को हमें उतार फेंकना है और इसके लिए हमें पुनः हथियार उठाने हैं।" तब जर्मनी के युवक प्रसन्न होकर झूम उठे और उन्होंने मित्रराष्ट्रों से

प्रतिशोध लेने के लिए हथियार उठा लिया और इस स्थिति में युद्ध अवश्यम्भावी हो गया।

(2) राष्ट्रसंघ की निर्बलता —

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद राष्ट्रसंघ की स्थापना इस उद्देश्य से की गई थी कि वह संसार में शांति कायम रखेगा। लेकिन राष्ट्रसंघ शक्तिहीन संस्था साबित हुआ। इसने छोटे २ राज्यों के आपसी झगड़े तो निबटा लिए लेकिन जब बड़े राष्ट्रों का मामला आया तो वह कुछ नहीं कर सका। जापान ने चीन पर चढ़ाई कर दी और इटली ने अबीसीनिया पर हमला किया तब राष्ट्रसंघ इसे रोकने में असफल रही। लेकिन विद्वानों का कहना है कि इसके लिए संस्था को दोष देना ठीक नहीं है। चर्चिल ने ही कहा था कि "राष्ट्रसंघ की असफलता के लिए राष्ट्रसंघ दोषी नहीं है, वरन उसके सदस्य दोषी हैं।" राष्ट्रसंघ राज्यों की संस्था थी और उनका कर्तव्य था कि वे इस संस्था को सफल बनाते। राष्ट्रसंघ ने अबीसीनिया पर आक्रमण करने के अपराध में इटली को दंड दिया। इसके विरुद्ध आर्थिक पाबंदियाँ लगाई गईं लेकिन ब्रिटेन और फ्रांस ने इसका साथ नहीं दिया। लेकिन हम इतना कह सकते हैं कि जिस उद्देश्य से राष्ट्रसंघ की स्थापना हुई थी उसकी पूर्ति करने में वह सर्वथा असफल रहा।

गुटबंदी —

तत्कालीन लोगों में यह अंधविश्वास बैठ गया था कि सैन्य संधि और गुटबंदी से विश्वशांति कायम रखी जा सकती है। अतः शांति कायम रखने के उद्देश्य से

यूरोप फिर से दो विरोधी गुटों में बंट गया। एक गुट का नेता जर्मनी था और दूसरे का फ्रांस। इन दोनों गुटों में दो बात थी — सैद्धान्तिक समानता और हितों की एकता। जिन देशों को पेरिस शांति सम्मेलन से निराशा हुई थी, वे फासिस्टवादी हो गए थे और एक समान अपनी शक्ति में वृद्धि करने लगे थे। इन राज्यों में जर्मनी, इटली और जापान प्रमुख थे। फ्रांस का गुट फासिस्टों से बचाव करता था और शांति की आड़ में अपनी शक्ति को अजेय बनाए रखना चाहता था लेकिन रूस भी साम्यवादी था, तो फासिस्टों के साथ था और न फ्रांसीसी गुट के साथ। अतः दोनों गुट उसे अपने गुट में मिलाने के लिए प्रयत्नशील थे। अंत में रूस जर्मनी को साथ मिल गया। इस प्रकार इन गुटों से युद्ध की पृष्ठभूमि तैयार करने में काफी सहयोग दिया। ये दोनों गुट एक-दूसरे को शंका की दृष्टि से देखने लगे।

हथियारबन्दी —

जब दो राष्ट्रों में मनमुटाव पैदा होने लगता है तब एक देश दूसरे देश से आशंकित होने लगता है और वे अपनी सुरक्षा के पक्ष में जुट जाते हैं। इस अवस्था में सुरक्षा का एकमात्र उपाय हथियारों को बढ़ाना समझा जाता है। जो राष्ट्र जितना अधिक शक्तिशाली होगा, जिसके पास जितनी अधिक सेना होगी वह अपने को उतना ही अधिक शक्तिशाली समझता है। इस सिद्धान्त में यूरोप

के सभी राज्य विश्वास करते थे। युद्ध के बाद जर्मनी यद्यपि बिल्कुल पस्त पड़ा हुआ था, फिर भी फ्रांस को जर्मनी से काफी भय था, इसलिए वह हथियारों की होड़ में लगा रहता था। युद्ध के बाद भी वह सैनिक शक्ति में सर्वप्रथम स्थान रखता था। हर वर्ष उसका सैनिक बजट बढ़ता ही जाता था। प्रथम महायुद्ध में फ्रांस की सीमा को जर्मनी बड़ी आसानी से पार कर गया था। अतः भावी जर्मन-आक्रमण से बचने के लिए फ्रांस ने 1937 ई० में स्विट्जरलैंड की सीमा से डनकर्क तक किलों की एक श्रृंखला तैयार की जिसको मैगिनो (Magino) लाइन कहते हैं।

1935 ई० में जब संसार की स्थिति काफी बिगड़ गई तो ब्रिटेन में भी हथियारबंदी शुरू हो गई। ब्रिटेन का अनुकरण करते हुए वे देश भी हथियारबन्दी करने लगे, जो अबतक चुप बैठे थे। इस समय तक जर्मनी में नात्सी क्रांति हो चुकी थी। जर्मनी में हिटलर ने भी हथियारबन्दी शुरू कर दी। कुछ ही दिनों में जर्मनी की सैन्य शक्ति में वृद्धि होने लगी। उसका वेहरमख्त (थल सेना) और लुफ्तवाफे (वायु सेना) संसार की सबसे बड़ी शक्तिशाली सैन्य शक्ति थी। फ्रांस की मैगिनो-लाइन के जवाब में उसने भी एक समानान्तर सीगफ्रीड लाइन बनाई, जो किसी भी हालत में फ्रांस की किलाबंदी से कम नहीं थी। इस प्रकार देखते २ सारा यूरोप एक शस्त्रागार हो गया। सभी देशों में सैनिक-सेवा अनिवार्य कर दी गई। राष्ट्रीय बजट का अधिकांश सेना पर खर्च होता था। कहीं तक राष्ट्रसंघ के तत्वावधान में इस बात का प्रयास

होता रहा कि हथियारबंदी को छोड़ दिया जाए। लेकिन, राष्ट्रसंघ को सफलता नहीं मिली और यूरोप में शस्त्रीकरण की दौड़ होती रही। इस सैनिक तैयारी को देखकर यही निष्कर्ष निकाला जाने लगा कि युद्ध अब अवश्यम्भावी है और इसके लिए तैयार रहना ही ठीक है।

आर्थिक मंदी - 1929-30 की आर्थिक मंदी ने एक नयी स्थिति उत्पन्न कर दी। इससे सारा संसार तबाह था। प्रत्येक राज्य ने अपने निजी उद्योगों की रक्षा के लिए भारी कर-प्रणाली, आयात कर, समुद्री व्यापार प्रतिबंध, आयात निर्यात संबंधी नियंत्रण आदि लागू कर दिए। इस नीति से सम्पन्न देशों का माल इतना बढ़ गया कि उसकी खपत अपने देशों में न हो सकी। अतः उपनिवेश की खोज होने लगी। ठीक ही जापान, इटली और जर्मनी एक दूसरे से सहयोग और सद्भावना रखने लगे तथा उपनिवेशवाद की ओर अग्रसर हुए।

उपनिवेशों की खोज -

(a) यह व्यापारिक सामरिक और राजनीतिक महत्व को बढ़ाता था।

(b) जर्मनी, इटली, जापान अन्य देशों से आगे बढ़ जाना चाहते थे।

(c) वर्साय संधि के द्वारा जर्मनी के सारे उपनिवेश छीन लिए गए थे अतः जर्मनी (हिटलर) ने प्रसार नीति की मांग की।

(d) आस्ट्रिया, चेकोस्लोवाकिया और पोलैंड हिटलर की प्रसार नीति के शिकार बने।

(e) इटली भी तेल, लोहा और कोयले की मांग की

कभी महसूस कर रहा था जितनी प्रीति वह उपनिवेशों से करना चाहता था।

जापान का अभ्युदय —

1- 1921-22 से जापान साम्राज्य विस्तार की ओर तेजी से उन्मुख हुआ।
2- 1931 में वाशिंगटन सम्मेलन की शर्तों को ठुकराकर मंचूरिया पर आक्रमण कर दिया
3- उत्तरी चीन को रौंदा
4- राष्ट्रसंघ की सदस्यता से त्यागपत्र दिया
5- 1936 में जर्मनी से संधि की ताकि उसकी स्थिति मजबूत रहे।
6- इटली भी इस संधि में शामिल हो गया
7- 1936 1939 में जापान ने पुनः चीन पर आक्रमण कर दिया।

इटली की साम्राज्य वादी नीति —

1- इटली में मुसोलिनी का उदय हुआ इसने अबीसिनिया पर आक्रमण किया।
2- इटली पर जब व्यापारिक प्रतिबंध लगाया गया तब उसने राष्ट्रसंघ से त्याग पत्र दे दिया।
3- 1933 में मुसोलिनी ने हिटलर से संधि कर ली। परिणामस्वरूप उसने अबीसिनिया पर इटली के अधिकार को मान्यता दे दी
4- हिटलर ने जापान से संधि कर ली अतः रोम, बर्लिन और टोकियो साम्राज्यवाद की स्थापना में एक दूसरे को सहयोग देने लगे।

ब्रिटेन की कूटनीति —

1- ब्रिटेन साम्यवादी देश रूस के विस्तार को रोकना चाहता था ताकि अपने साम्राज्य का विस्तार करे।

2- अतः इसने फ्रांस पर दबाव डालकर जर्मनी इटली और जापान के विरुद्ध उभारने का प्रयत्न किया ताकि रूस का विनाश हो।

3 - चेकोस्लोवाकिया का विनाश रूस पर आक्रमण करने के उद्देश्य से किया (हिटलर उत्साहित होकर भी गया)?

4- पोलैण्ड के विनाश में भी यही मंशा थी।

5 - लेकिन हिटलर इस मंशा को पूरा नहीं होने दिया और अंततः युद्ध का भयंकर वातावरण तैयार हो गया।

मित्र राष्ट्रों के पारस्परिक झगड़े –

1- इंग्लैंड और फ्रांस में जर्मनी को लेकर मतभेद होना – क्योंकि

(1) फ्रांस जर्मनी से कठोरता का व्यवहार करना चाहता था। जबकि इंगलैंड अपने व्यापार के पुनरुद्धार के चलते नरमी बरतना चाहता था।

(2) अमेरिका भी वर्साय की संधि को अस्वीकृत कर दिया था और यूरोप की राजनीति से तटस्थ हो गया।

(3) ब्रिटेन भी यूरोपियन राजनीति से उदासीन हो गया था।

(4) अमेरिका और ब्रिटेन आंशिक निःशस्त्रीकरण भी किया पर फ्रांस अपनी

शक्ति बढ़ाना रहा।

(5) ~~वर्साय~~ वर्साय की संधि के अनुसार इंगलैंड और अमेरिका दोनों ने ही फ्रांस की सुरक्षा का दायित्व लिया था पर वर्साय संधि से तटस्थ हो जाने पर फ्रांस की सुरक्षा का आश्वासन जाता रहा

(6) सुरक्षा के लिए निराश होने पर फ्रांस ने पोलैंड, बेल्जियम एवं चेकोस्लोवाकिया के साथ अलग-अलग संधियाँ की।

7) साम्यवादी रूस एवं मित्र राष्ट्रों में भी झगड़ा चल रहा था। अतः अन्तर्राष्ट्रीय समाज में रूस को निमंत्रित नहीं किया जा रहा था अतः रूस ने जर्मनी से मित्रता कर ली।

उपरोक्त कारणों से द्वितीय विश्वयुद्ध की उत्पत्ति हुई।